ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
एक ऐसी जीवनपद्धति है
जो किसी जीव को, चाहे वो
भूमि, जल अथवा वायु का हो
भय, पीड़ा अथवा मृत्यु नहीं पहुँचाती

वर्ष 12 अंक 4, शिशिर 2022
करुणा-मित्र
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी – भारत की पत्रिका
प्राणी अधिकारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक धर्मार्थ ट्रस्ट

सम्पादकीय

भारत की धरती पर चीते का पुनरागमन: किस कीमत पर?

भारत में 1947 तक चीते आसानी से पाए जाते थे। छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में 1947 में चीते अंतिम बार देखे गये थे। परन्तु, शिकार की बढ़ती गतिविधियों के चलते आखिरकार 1952 में पूरे देश से चीतों का नामशेष होना घोषित कर दिया गया था।

कुनो राष्ट्रीय उद्यान प्रवेशद्वार। *तसवीर सौजन्य:* **thehindu.com**

कुनो राष्ट्रीय उद्यान में जब चीतों के आगमन की प्रतीक्षा की जा रही थी, तब उनके लिए आरक्षित पिंजरों में बकरियों को चारे के रूप में रखा गया था, ताकि उनका भक्षण वहां पर रखे गये तेंदुए कर सकें। परन्तु, तेंदुए बकरियों को छूते तक नहीं थे। इसके फलस्वरूप, उन्हें खुले जंगल में छोड़ना और स्वयं शिकार कर सकें ऐसे सक्षम बनाना कठिन हो रहा था। यद्यपि, इसके एक सप्ताह के पश्चात् भारतीय वन्यजीवन संस्था के डीन ने नामिबिया से बंदी अवस्था में रखे गये चीतों को भारत में लाने का प्रोजेक्ट ही रद्द कर दिया। क्योंकि, वहाँ पर बंदी रखे गये चीतों को स्वयं शिकार करने में दिक्कत हो रही थी। इस वजह से उन्हें भारत भेजना मुश्किल हो रहा था। अत: वहां से केवल जंगल से पकडे गये और न कि बंदी अवस्था में रखे गये चीतों को स्वीकार किया जा सकेगा, ऐसा निर्णय हुआ। उन्हें भी लाने के लिए CITES से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक था। तत्पश्चात, समाचारों के द्वारा पता चला कि जो 8 चीते आयात किये जायेंगे और प्रधानमंत्री के द्वारा दि. 17 सितम्बर को उन्हें जंगल में खुले छोड़े जायेंगे, वे जंगल से पकडे गये थे, न कि पिंजरे में रखे गये। नई दिल्ली स्थित पत्रकार अनीता कात्याल का निरीक्षण "कुनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों के आगमन के पश्चात् उनके लोकार्पण के अवसर पर प्रधानमंत्री समेत 300 अतिथियों के लिए आवासी सुविधा के लिए टेन्ट बनाने के लिए बड़ी संख्या में पेड़ों को काटा गया। यही नहीं, प्रधानमंत्री के हेलिकोप्टर की उतराई के लिए और पेड़ों को भी काटा गया।" इस घोषणा के पूर्व, पालपुर राजवी परिवार के वंशजों ने सत्र न्यायालय में गुहार लगाईं कि पालपुर गढ़ी और जागीर को सन 1981 में अभयारण्य घोषित किया गया था। उस समय वहां पर केवल गिर के सिंहों को ही बसाना प्रस्तावित था। हालाँकि, वहाँ पर कभी गिर के सिंह नहीं लाये गये और अब उनके स्थान पर चीतों को लाने की बात चल रही है। और अंततः वहां पर चीतों को लाया गया।

चीतों का आगमन

मध्य प्रदेश में स्थित कुनो राष्ट्रिय उद्यान (कुनो नेशनल पार्क) में हाल ही में चीता परियोजना (प्रोजेक्ट चीता) के तहत पांच नर चीते एवं तीन मादा चीते आयात किये गये हैं। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1952 के पश्चात् हमारे देश में चीते की प्रजाति लुप्तप्राय: हो गई थी। अब 70 वर्षों के पश्चात् भारत में इनका पुनर्वसन किया जा रहा है। भारत

से 8,000 कि.मी. दूर नामिबिया से इन्हें लाया गया है और 15 x 30 मीटर के पिंजरे में इन्हें रखा गया है। भारत सरकार के द्वारा नामिबिया सरकार के साथ 20 जुलाई 2022 को जीव वैविध्य संरक्षण एवं चीतों के पुनर्वसन को ध्यान में रखते हुए एक समझौता किया गया है। चीता परियोजना के तहत 12 और चीते दक्षिण अफ्रीका से लाये जायेंगे। आगामी पांच वर्षों में सरकार के द्वारा 50 और चीतों को लाने की योजना है।

कुनो राष्ट्रीय उद्यान में दो चीतों का आगमन। *तसवीर सौजन्य:* **baaghitv.com**

आशंका

भारत में आठ चीतों के आगमन पर देश के प्रमुख प्रकृति संरक्षक वाल्मिक थापर ने "कुनो राष्ट्रीय उद्यान में आने वाले चीते कैसे विचरण करेंगे, कैसे शिकार करेंगे, कैसे भोजन लेंगे और कैसे अपने बच्चों को पालेंगे, जबकि उक्त उद्यान में जगह और शिकार की कमी है प्रकार के विभिन्न प्रश्न उठाये हैं। इस क्षेत्र में लकड़बग्धे और तेंदुओं की बहुतायत है, जोकि चीतों के जानी दुश्मन हैं। अफ्रीका में लकड़बग्धे चीते का पीछा करते हैं और मार भी डालते हैं।" उन्होंने NDTV को एक साक्षात्कार में बताया। "आसपास के 150 गाँवों में कुत्ते हैं, जो चीतों को चीर के रख सकते हैं। उल्लेखनीय है कि चीतों को भागने के लिए यहाँ पर पर्याप्त स्थान नहीं है और चीता भव्य एवं अत्यधिक नरम प्राणी है, किंतु, भंगुर भी है। अत: उनका पुनर्वसन एक बड़ी चुनौती है।" थापर ने यह भी बताया कि "चीते पालना कठिन हो सकता है। वर्तमान में पूरे विश्व में उनकी आबादी 6,500 से 7,100 के करीब रह गई है और उनकी मृत्यु दर 95% है। इनके जीवन को सुनिश्चित करने हेतु इनकी निगरानी चौबीसों घंटे और सप्ताह के सभी सातों दिन करनी आवश्यक है।"

इस पूरे घटनाक्रम में उल्लेखनीय बात यह रही है कि इन चीतों के भोजन के लिए नरसिंहगढ़ से 181 चीतल और हिरण को विशेष रूप से कुनो पालपुर लाया गया है। सामान्यत: वनों में हिंसक प्राणी अपना शिकार स्वयं खोज लेते हैं, उस प्रक्रिया में कहीं पर भी मनुष्य का न कोई हस्तक्षेप होता है, न ही सक्रिय योगदान होता है। फलत: वे हिंसा के भागी नहीं बनते हैं। जबकि, इस उपक्रम में सुनियोजित तरीके से चीतों के भोजन के लिए निरीह मासूम हिरण–चीतल को चीतों के भोजन के लिए बंद बाड़े में छोड़ देना अमानवीय क्रूरता एवं निर्दयता है।

हमारे देश में बारहसिंगों का निर्यात प्रतिबंधित है। चीतों के द्वारा शिकार किये गये बारहसिंगे या चीतल यदि खाए नहीं

वन्य प्रांगण में मुक्त किया गया चीता। *तसवीर सौजन्य:* **kunonationalpark.org**

केवल आयातित चीते जैसे हिंसक जानवरों का भोजन बनने के लिए मासूम चीतल और हिरण को उनके आवास से विस्थापित करना क्रूरता नहीं है?
तसवीर सौजन्य: Charles J Sharp, wikimedia

गए, तो उनका क्या होगा? साथ ही चीतल और बारहसिंगों को मांस के लिए मारना क्या अवैध नहीं होगा?

भारत में चीतों को लाये जाने का व्यापक विरोध हुआ है। अखिल भारतीय बिश्नोई महासंघ के अध्यक्ष देवेन्द्र बिश्नोई का कहना है, कि बिश्नोई समाज विगत 500 वर्षों से वनों के संरक्षण एवं सुरक्षा के लिए संघर्षरत है। उनके समाज के अब तक करीबन 363 सदस्यों ने वनों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए अपनी जान की आहुति दी है। उन्होंने भारत में चीतों के भोजन के लिए चीतल को परोंसे जाने पर कड़ी आपत्ति जताई है। उन्होंने यह भी कहा है कि कहीं पर भी वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध नहीं हुआ है कि पर्यावरण में चीतों की आवश्यकता है और चीतल की आवश्यकता नहीं है। जीववैविध्य के हिसाब से चीतों और चीतल दोनों को समान महत्त्व दिया जाना चाहिए। इस स्थिति में हम चीतल की बलि चीतों को चढाते हैं, यह कितना उपयुक्त है?

इसी प्रकार लक्ष्मणगढ़ जैन समाज के अध्यक्ष सुमेर चंद जैन ने बताया है कि कुनो राष्ट्रीय उद्यान में सैंकड़ों चीतल, हिरण और अन्य पशुओं को चीतों के भोजन के रूप में प्रस्तुत करने की व्यवस्था की गई है, यह सर्वथा अनुचित है। उन्होंने प्रधानमंत्री को संबोधित पत्र में अपनी आपत्ति जताते हुए कहा है कि प्रोजेक्ट चीता के तहत इस प्रकार निरीह मासूम प्राणियों का कत्ल किया जाना किसी भी सुरत में स्वीकार्य नहीं है। इस प्रोजेक्ट पर तुरंत ही रोक लगाकर इसे शीघ्रतया निरस्त किया जाना चाहिए।

अनुकूलन

टाइम्स समूह के पी. नवीन की रिपोर्ट में दर्शाया गया है कि नामिबिया से चीतों को भारत लाते समय एक मादा चीता आशा गर्भवती थी। पुनर्वसन के दौरान उसे अपना भ्रूण गंवाना पड़ा। पुनर्वसन के दौरान तनावपूर्ण स्थिति के कारण ऐसा होना संभव है।

इन्डियन एक्सप्रेस की एक खबर में सूचित किया गया है कि बड़े वन्य प्रांगण में स्थानांतरित किये जाने के पश्चात् दो चीते ने चीतल का अपना प्रथम शिकार किया है। इस में क्या बड़ी बात है? चीतों के भारत आगमन के बाद उन्हें लंबे समय तक उन्हें अन्य प्राणियों के संक्रमण से बचाने के लिए कोरन्टाइन में रखा गया। इस दौरान उन्हें भैंस का मांस खिलाया गया। अब जब उन्हें बड़े वन्य प्रांगण में छोड़ा गया है और उसने अपना प्रथम शिकार भी किया है तो इसका अर्थ यह हुआ कि चीतों का पुनर्वसन कार्यक्रम पूर्वनिर्धारित रूप से चल रहा है। तकरीबन 5 वर्ग कि. मी. के क्षेत्र में 9 कक्षों में कुल मिलाकर 4,000 चीतल छोड़े जायेंगे, जिनका चीते शिकार करेंगे। वैसे नामिबिया में चीते और तेंदुए साथ में रहते थे। यहाँ पर भी उनका साथ देने के लिए 150 तेंदुए रखे जाने का आयोजन है।

सरकार से हमारा अनुरोध है कि इस प्रोजेक्ट को यहीं पर रोक दिया जाए और चीतल, आदि मासूम प्राणियों को चीतों के भोजन के रूप में प्रस्तुत करना बंद किया जाए।

भरत कापडीआ
संपर्क: *editorkm@bwcindia.org*

जैन व्हीगन व्यंजन

इस स्तंभ के अंतर्गत जैन व्हीगन व्यंजन बनाने की विधि प्रस्तुत है। यदि आप भी कोई रेसिपी भेजना चाहते हैं, तो पत्र/ई-मेल के द्वारा भेजें। व्हीगन से हमारा तात्पर्य यह है कि शाकाहारी लोगों की ऐसी श्रेणी, जोकि खाने-पीने में प्राणिज पदार्थ से बनी किसी भी वस्तु के प्रयोग से दूर रहते हैं। निम्नदर्शित व्यंजन आपकी प्रतिरक्षा (इम्यूनिटी) सिस्टम को न केवल बढ़ावा देती हैं, आरोग्यप्रद और स्वादिष्ट भी हैं।

मखाना

मखाना का नियमित उपभोग करने के अत्यधिक लाभ है: हृदय विषयक सुरक्षा, दस्त की बीमारी में सुधार, यकृत का यथोचित कार्य, रक्तचाप का नियंत्रण, गठिया की बीमारी में राहत, नपुंसकता और काल-प्रभाव (Aging) की स्थिति में रोक, आदि। मखाना का रोज़ाना 25 ग्राम की मात्रा में सेवन किये जाने पर बेहतरीन ऊर्जा प्राप्त होती है।

मखाना साधारणत: खोलीदार और सूखे पाए जाते हैं, जिन्हें पानी में भिगोना पड़ता है। ध्यान रहे कि इन्हें पकाने के पूर्व पानी गर्म होना आवश्यक है। (यह आवश्यक है कि उसे ठंडा पानी छूना नहीं चाहिये, अत: उन्हें रात के दौरान पानी में न भिगोयें।) यदि इन्हें आप भुनकर नमक डालकर नाश्ते के रूप में खाना या परोंसना पसंद करते हैं तो इन्हें भिगोने की आवश्यकता नहीं है।

पंजीरी

सामग्री

150 मिलि तेल
3/4 कप गोंद (Gum Crystals)
3 कप मखाना
1 कप काजू
1½ कप बादाम
¾ कप पिस्ता
½ कप किशमिश
1 कप खीरा बीज (Melon Seeds)
500 ग्राम सूजी
1 कप नारियल पाउडर
1 छोटा चम्मच इलाइची पाउडर
500 ग्राम पीसी हुई चीनी

बनाने की विधि

सबसे पहले कड़ाई में थोड़ा सा तेल डालें और गोंद को भुनें (थोड़ी ही देर में गोंद फूलकर दुगना हो जाएगी)।

फिर गोंद को निकाल ले और उसी तेल में मखाना और शेष ड्राय फ्रूट्स को एक एक करके भुनें। तत्पश्चात् काजू को भी भुन लें और ऐसे ही बादाम और पिस्ता को भी भुन लें और एक कटोरे में सारे भुने हुए ड्राय फ्रूट्स को ले लें।

अब सारे ड्राय फ्रूट्स को मिक्सी जार में डालकर उन्हें दरदरा पीसें।

अब कड़ाई में फिर से बचे हुए तेल को डालकर उसमें किशमिश और खीरा के दानों को अलग अलग भुनकर निकाल लें।

फिर बचे हुए तेल में सूजी को डालकर उसे भुनें।

जब सूजी भुनकर लाल होने लगे तो उसमें नारियल पाउडर और इलाइची पाउडर को डाल दें।

अब एक बड़ा सा कटोरा लेकर उसमें भुनी हुई सूजी, दरदरा पीसा हुआ ड्राय फ्रूट, किशमिश, खीरा के बीज और पीसी हुई चीनी को डालें।

अब उसे अच्छे से मिला लें।

इसे आप एयर टाइट कंटेनर में रखकर 2-3 महिने तक खाने के लिए प्रयुक्त कर सकते हैं।

बी डब्ल्यू सी द्वारा जांचे-परखे व आस्वाद किये गए स्वादिष्ट व्यंजनों की विधि का संकलन देखने के लिए कृपया *www.bwcindia.org/Web/Recipes/Recipesindex.html* की मुलाकात लें।

प्रकाशक: डायना रत्नागर,
अध्यक्षा, ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
सम्पादक: भरत कापडीआ
डिझाईन: दिनेश दाभोळकर
मुद्रण स्थल: श्री मुद्रा
181 शुक्रवार पेठ, पुणे 411002

करुणा-मित्र
का प्रकाशनाधिकार
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी के पास सुरक्षित है।
प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना
किसी भी प्रकार से किसी भी मुद्रित सामग्री
की अनधिकृत प्रतिकृति करना प्रतिबंधित है।

करुणा-मित्र प्राणिज पदार्थ-रहित कागज़
पर मुद्रित किया जाता है,
और प्रत्येक
बसंत (फरवरी), ग्रीष्म (मई),
वर्षा (अगस्त) एवं शिशिर (नवम्बर)
में प्रकाशित किया जाता है।

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
4 प्रिन्स ऑफ वेल्स ड्राइव, वानवडी, पुणे 411 040
टेलिफोन: +91 (20) 2686 1166 WhatsApp: 74101 26541
ई-मेल: admin@bwcindia.org वेबसाईट: www.bwcindia.org

निजी प्रचलन हेतु Reg. No. 022203/30/86/AL/TC